Vol 4 Issue 11 Dec 2014

ISSN No : 2230-7850

International Multidisciplinary Research Journal

Indian Streams Research Journal

Executive Editor
Ashok Yakkaldevi

Editor-in-Chief
H.N.Jagtap

Welcome to ISRJ

RNI MAHMUL/2011/38595 **ISSN No.2230-7850**

Indian Streams Research Journal is a multidisciplinary research journal, published monthly in English, Hindi & Marathi Language. All research papers submitted to the journal will be double - blind peer reviewed referred by members of the editorial board.Readers will include investigator in universities, research institutes government and industry with research interest in the general subjects.

International Advisory Board

Flávio de São Pedro Filho
Federal University of Rondonia, Brazil

Kamani Perera
Regional Center For Strategic Studies, Sri Lanka

Janaki Sinnasamy
Librarian, University of Malaya

Romona Mihaila
Spiru Haret University, Romania

Delia Serbescu
Spiru Haret University, Bucharest, Romania

Anurag Misra
DBS College, Kanpur

Titus PopPhD, Partium Christian University, Oradea,Romania

Mohammad Hailat
Dept. of Mathematical Sciences, University of South Carolina Aiken

Abdullah Sabbagh
Engineering Studies, Sydney

Ecaterina Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest

Loredana Bosca
Spiru Haret University, Romania

Fabricio Moraes de Almeida
Federal University of Rondonia, Brazil

George - Calin SERITAN
Faculty of Philosophy and Socio-Political Sciences Al. I. Cuza University, Iasi

Hasan Baktir
English Language and Literature Department, Kayseri

Ghayoor Abbas Chotana
Dept of Chemistry, Lahore University of Management Sciences[PK]

Anna Maria Constantinovici
AL. I. Cuza University, Romania

Ilie Pintea,
Spiru Haret University, Romania

Xiaohua Yang
PhD, USA

.....More

Editorial Board

Pratap Vyamktrao Naikwade
ASP College Devrukh,Ratnagiri,MS India

R. R. Patil
Head Geology Department Solapur University,Solapur

Rama Bhosale
Prin. and Jt. Director Higher Education, Panvel

Salve R. N.
Department of Sociology, Shivaji University,Kolhapur

Govind P. Shinde
Bharati Vidyapeeth School of Distance Education Center, Navi Mumbai

Chakane Sanjay Dnyaneshwar
Arts, Science & Commerce College, Indapur, Pune

Awadhesh Kumar Shirotriya
Secretary,Play India Play,Meerut(U.P.)

Iresh Swami
Ex - VC. Solapur University, Solapur

N.S. Dhaygude
Ex. Prin. Dayanand College, Solapur

Narendra Kadu
Jt. Director Higher Education, Pune

K. M. Bhandarkar
Praful Patel College of Education, Gondia

Sonal Singh
Vikram University, Ujjain

G. P. Patankar
S. D. M. Degree College, Honavar, Karnataka

Maj. S. Bakhtiar Choudhary
Director,Hyderabad AP India.

S.Parvathi Devi
Ph.D.-University of Allahabad

Sonal Singh,
Vikram University, Ujjain

Rajendra Shendge
Director, B.C.U.D. Solapur University, Solapur

R. R. Yalikar
Director Managment Institute, Solapur

Umesh Rajderkar
Head Humanities & Social Science YCMOU,Nashik

S. R. Pandya
Head Education Dept. Mumbai University, Mumbai

Alka Darshan Shrivastava
Shaskiya Snatkottar Mahavidyalaya, Dhar

Rahul Shriram Sudke
Devi Ahilya Vishwavidyalaya, Indore

S.KANNAN
Annamalai University,TN

Satish Kumar Kalhotra
Maulana Azad National Urdu University

Address:-Ashok Yakkaldevi 258/34, Raviwar Peth, Solapur - 413 005 Maharashtra, India
Cell : 9595 359 435, Ph No: 02172372010 Email: ayisrj@yahoo.in Website: www.isrj.org

Indian Streams Research Journal
ISSN 2230-7850
Impact Factor : 2.1506(UIF)
Volume-4 | Issue-11 | Dec-2014
Available online at www.isrj.org

मीडिया की भाषा

सुनिता क्षीरसागर

[1]सहा. प्राध्यापक (हिन्दी) शास. कला एवं विज्ञान महाविद्यालय, रतलाम शास.
[2]प्राध्यापक (हिन्दी) कला एवं विज्ञान महाविद्यालय, रतलाम.

सारांश :भाषा का उद्‌गम, विकास, उपयोग–पध्दति और परिणामकारक के अध्ययन की एक रचतंग ज्ञानशाखा ''भाषा विज्ञान'' के रूप में अस्तित्व में है । संप्रेषण–भाषा में भाषा को संप्रेषण प्रक्रिया के मूलभूत–प्राथमिक एवं अधिकतम उपयोब में लाए जानेवाले माध्यम की श्रेणी दी गयी है । उसी प्रकार संप्रेषण–विदों ने सर्व–सम्मति से इस तथ्य को स्वीकारा है कि संप्रेषक द्वारा संप्रेषण के दौरान उपयोग में लाए जाने वाले विभिन्न माध्यमों के अनुसार संप्रेषक की भाषा में भी परिवर्तन पाया जाता है । सूचना प्रौद्‌योगिकी का परिणाम भी भाषा के उपयोग पर होता हुआ स्पष्ट दिखाई देता है । विशेषकर समाचार प्रस्तुति में जिस भाषा का उपयोग किया जाता है उसमें भी सूचना प्रौद्‌योगिकी का प्रत्यक्ष तथा अप्रत्यक्ष परिणाम होता है, और इसी विषय को लेकर 'भाषा' को महत्व देने में मैं अपना प्रसंग कर रही हूं ।

प्रस्तावना :–

मीडिया अखबार, दूरदर्शन, रेडिओ, इंटरनेट, पत्र–पत्रिकाओं इत्यादी के माध्यम के समाचार और सूचना प्रस्तुत करता है । इसे हम प्रिंट मीडिया में प्रमुखतः बांट सकते है । आज समाचारों के इन माध्यमों ने इस नए दौर में एक नई भाषा को भी जन्म दिया है । किसी भी भाषा के समाचारों को परखने के बाद हम इस निष्कर्ष पर पहुंच सकते हैं ।

हिन्दी के क्षेत्र में भी एक नई का जन्म हुआ है । हिन्दी, अंग्रेजी और लोकल भाषा से मिश्रित कई नए शब्दों के अविष्कार हो रहे हैं और हम इसे अवना भी रहे हैं । अर्थात हमारा शब्दकोश बढ रहा है । मीडिया के प्रभाच ने हमें एक नई दुनिया से परिचित करवाया है । इस दुनिया के दोनों पक्ष से हम रूबरू होते हैं ... सकारात्मक और नकारात्मक ।

मान्यवर साहित्यकार नामवर सिंह जी अपने एक लेख में लिखते हैं कि हिन्दी गद्य की शुरूआत ही पत्रकारिता से हुई । हिन्दी गद्य न आया होता अगर पत्रकारिता न शुरू हुई । एक लम्बे अरसे तक इन्नीसवीं शताब्दी में जब हिन्दी का पहला अखबार कलकत्ता से निकला था, तव से लेकर आज तक उन्नीसवीं के जितने बडे गद्य लेखक हैं, वे स्वयं पत्रकार थे । इस श्रृंखला में कई नाम गिनाये जा सकते है : जैसे – हरिशचन्द्र, प्रतापनारायण मिश्र, बालकृष्ण भट्‌ट, बाबू बालमुकुन्द इत्यादी। बीसवीं शताब्दी में जुडे थे और साहित्यकार भी थे । उस दौर में अखबार बडा प्रभावी अहम हुआ करता था । वो लोग जो सचमुच लेखक नहीं थें, अखबार के जरिये लडाई लडते थे और उसी अखबार में कविताएं, कहानियां, उपन्यास के अंश इत्यादी भी छापते थे । अतः उस दौर में साहित्य और पत्रकारिता एकदम जुडी हुई चीज थी । यह दौर हाल के कुछ सालों से खत्म हो रहा है । अब मीडिया से साहित्य लगभग लूप्त हो रहा है । कई समाचार पत्रों के और चैनलों के नाम गिनाए जा सकते है, जिनके दरबार में साहित्य दर्शन नदारद है । प्रेमचंद, निराला, जयशंकर प्रसाद, पंत, मुक्तिबोध, अमृतलाल नागर, रघुवीर सहाय, मनोहर श्याम जोशी, अमरकांत इत्यादी कई ऐसे साहित्यकार थे, जो पत्रकारिता और साहित्य की धारा समांतर चलाते थे । ये सभी लोग किसी न किसी पत्र–पत्रिका से जुडे रहें । मगर नये दौर में चीजें बदल रहा है । अतः समाज के प्रति दायित्व भी खत्म हो रहा है । आज के दौर में हम देख सकते हैं कि पत्र–पत्रिकाओं और अखबारों की संख्या बढी है । हां, स्वरूप जरूर बदला है, माालिकों के अंदाज हैं और पाठकों की संख्या भी बदली है, पर इसकी जरूरत हमेशा महसूस की जाएगी । प्रौद्‌योगिकी क्रांती के चलते यह शंका व्यक्त की जा रही थी कि भविष्य में पत्र–पत्रिकाओं का अस्तित्व खत्म हो जाएगा, पर ऐसा नहीं हुआ । आज समाचार पत्र भी विज्ञापनों से पढे जा रहे है । नारी सौंदर्य को भुनाया जा रहा है । राजनीति, खेल, फैशन, खानपान, व्यापार, फिल्मी सितारों का जीवन, पार्टियों की न्यूज इत्यादी फंडो से इसे भी आकर्षक बनाया जा रहा है । ब्लैक एंड व्हाइट का जमाना खत्म हो गया और इसकी जगह फोरकॅलर प्रिंटींग और आकर्ष्रक फोटोग्राफी ने ले ली है । अंतराष्ट्रीय खबरें तो अक्सर वैसी ही छाप दी जाती है वैसे विदेशी पत्रों में होते है । हां नारी जगत के लिए विशेष रूप से पन्नों का प्रावधान हर पत्र–पत्रिका में देखा जा सकता है । लेकिन लोप होती देशी भाषाएं आज चिंता का विषय है । गांव–गांव में अंग्रेजी माध्यम के स्कूल खुल रहे हैं । अगली पीढी हमारी देशी भाषाओं को भूल

जायेगी, हमारी बोलियों का लोप हो जाएगा । यह शंका बनी हुई । इस दिशा में संचार माध्यमों को चुनौतीपूर्ण भूमिका निभाने की जरूरत महसूस की जा रही है, जो स्थिति संस्कृत ही हुई, वही आज उर्दू की है । कल तमिल, कन्नड, बंगला, मराठी, गुजराती, पंजाबी, हिन्दी इत्यादी भाषाओं के साथ भी यह हश्र हो सकता है । अतः संचार माध्यमों को और साहित्य को चाहिए कि वे युवाओं को । किताबें हमारी अनमोल धरोहर हैं, इनकी उपेक्षा संस्कृति की दृष्टि से निश्चित रूप से खतरे की घंटी है । साहित्य को उचित स्थान दिया जाना चाहिए ।

संवाद किसी भी जीवित प्राणी की नैसर्गिक वृत्ति होती है और मौखिक संवाद मानवी नैसर्गिक वृत्ति है । मानवी संप्रेषण में जब मौखिक संप्रेषण का ही चलन था तब भाषा न केवल एक अभिव्यक्ति का माध्यम थी, बन्कि वह एक मानवी विकास का निदेंशांक भी थी । लोककला एवं लोकसंस्कृति में विचार, सूचना भावना आदि के आदान – प्रदान के लिए भाषा एक प्रभावी माध्यम के रूप में उभरी । बोली–भाषाओं का चहुमुखी विकास इसी दौर में हुआ... पर्यायवाची शब्द, काव्य, भाषालंकार, नाद्मय और लयकारी से ओतप्रोत उच्चारण की एक परिकृत शैली का चलन इसी युग की देन हैं ।

मानवी सभ्यता में जानकारी और ज्ञान बढने से उनका संग्रह करने हेतु किसी बाहरी माध्यम की आवश्यकता महसूस होने लगी और भाषा केवल मौखिक रूप में न रहकर लिखित रूप मे भी उपयोग में लायी जाने लगी । मौखिक माध्यम से गुजर कर भाषा जब लिखित माध्यम का उपयोग करने की क्षमता वाले तथा ऐसी क्षमता न होने वाले दो गुटों में बंटा गया । समूचा ज्ञान लिखित माध्यमों में समेट कर, मुठ्ठी भर लोगों ने समाज को काबू में कर लिया और तब भाषा को अधिकाधिक जटिल और कूट पद्वति से उपयोग में लाया गया । मौखिक भाषा में उत्पन्न ध्वनि को चित्रित चिन्हों के माध्यम से व्यक्त करने की तकनीक का उपयोग करने वाले अर्थात लिखने और लिखा हुआ पढ सकने वालों ने सामाजिक सत्ता हथिया ली ।

समाज में आधुनिक तकनीक का उपयोग करने वालों की ही तूती बजती है, इस उक्ति का यह प्रथम अनुभव था । लिखित माध्यम से सुसंस्कृत, समृध्द, सभ्य एव्र सुन्दर भाषा का प्रयोग यह प्रगत मानव की पहचान थी ।उच्च अभिरूचि के साहित्य का निर्माण विभिन्न भाषिक प्रयोंगो का उपयोग कर अभिव्यक्ति को अधिकाधिक संपन्न और उन्नत स्वरूप में प्रकट करना यह प्रगति का एक मानक था

वैश्वीकरण का भाषा होता परिणाम :–

वैश्वीकरण का सीधा परिणाम भाषा पर हुआ है । आजकल, समाचार पत्रों में समाचार का पाठ्य जिस भाषा में होता है, उसमें अंग्रेजी और अन्य भाषाओं से उधार लिए गये शब्दों का धडलये से उपयोग होता दिखाई देता है । जैसे : भारत के लिए इंडिया, उपयोग में लाने के लिए यूज, करना रसोई के लिए किचन, पलंग के लिए बेड, मधुमेह के लिए शुगर की बीमारी आदि पाठकों को यही भाषा समझ में आती हैं, रो लेकर हमने भाषा की शुध्दता का ठेका नहीं ले रखा है, या आजकल इसी भाषा का चलन है, जैसी कई दलिलें दी जाती हैं, तकनीकि विकास का सीधा असर भाषा के उपयोग पर होता हुआ दिखाई देता है । वह यह कि कॅम्प्यूटर और मोबाइल के इस युग में भाषा की ओर होता दुर्यक्ष... जिनको भाषा की समझ है व कॅम्प्यूटर चलाना नहीं जानते और जिनको कॅम्प्यूटर चलाना आता है व भाषा की समझ की नहीं रखते, परिणामवश कॅम्प्यूटर में जो पाठ्य निर्माण किया जाता है, वह शुध्दता की कसोटी पर खरा नहीं उतरता । शुध्द लेखन और योजना को लेकर यह बिन्दू और तीव्र होता है । देवनागरी लिपि में 'हस्य दीर्घ' यानी बडी या छोटी 'ई' की अथवा बडे या छोटे 'उ' की मात्रा का प्रयोग करने से लेकर अंग्रेजी के शब्दों के स्पेलिंग तक कुछ ना कुछ गडबडी हर दूसरे देती है । सबसे पसंदीदा दलीलों में भावनाओं को समझो शब्दों या भाषा में क्या रखा है । निष्कर्ष में कहना चाहूगी मीडिया की आधुनिक समाज में भाषा पर दूरगामी एवं स्थायी परिणाम स्पष्ट दिखाई देते हैं । भाषा में अपूर्ण भूतकाल के स्थान पर अपूर्ण वर्तमानकाल का प्रयोग होना प्रारम्भ हुआ हैं। मानवीय त्रुटीयों के चलते भाषा की शुध्दता दुर्भक्षित होती है । सूचना प्रौद्योगिकी के कारण भाषीय संकर एवं अशुध्द लेखन का चलन बढता ही जा रहा है । नए संवेदात्मक माध्यम (New Interactive Media) में नई पीढी अधिकतर अभिरूचिहीन भाषा का प्रयोग करती है और प्रायः उसी को शिष्टाचार के रूप में देखती है ।

ग्रंथ सुचीः

1.शेष कादम्बरी – अलका सरावगी, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली 2001
2.कोई बात नहीं – अलका सरावगी, राजकमल प्रकाशन, 2004
3.नई कहानी दशा–दिशा और संभावना – श्री सुरेन्द्र, अपोलो पब्लिकेशन, जयपुर 1966
4.स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी कहानी में मानव – डॉ. हेतु, पंचशील, जयपुर 1983
5.हिन्दी कहानी सातवां दशक – पल्हाद अग्रवाल, मैकमिलन कं.ऑ. इंडीया 1978
6.समकालीन हिन्दी कहानी और समाजवादी चेतना – डॉ. किरण, अनुभव प्रकाशन कानपुर 1982
7.हिन्दी उपन्यास समकालीन विमर्श – डॉ. सत्यदेव त्रिपाठी अमन प्रकाशन रामबाग 2000
8.आधुनिक हिन्दी उपन्यास व्यक्तित्व विघटन के निकष पर – डॉ. नीरज जैन, निर्मल पब्लिकेशन दिल्ली, 2001
9.इक्कीसवीं सदी के संकट – रामशरण जोशी, राजकमल प्रकाशन, दरियागंज दिल्ली 2003

Publish Research Article
International Level Multidisciplinary Research Journal
For All Subjects

Dear Sir/Mam,

We invite unpublished Research Paper,Summary of Research Project,Theses,Books and Book Review for publication,you will be pleased to know that our journals are

Associated and Indexed,India

- International Scientific Journal Consortium
- OPEN J-GATE

Associated and Indexed,USA

- Google Scholar
- EBSCO
- DOAJ
- Index Copernicus
- Publication Index
- Academic Journal Database
- Contemporary Research Index
- Academic Paper Databse
- Digital Journals Database
- Current Index to Scholarly Journals
- Elite Scientific Journal Archive
- Directory Of Academic Resources
- Scholar Journal Index
- Recent Science Index
- Scientific Resources Database
- Directory Of Research Journal Indexing

Indian Streams Research Journal
258/34 Raviwar Peth Solapur-413005,Maharashtra
Contact-9595359435
E-Mail-ayisrj@yahoo.in/ayisrj2011@gmail.com
Website : www.isrj.org